ISSN 2349-9273

The Gunjan

Multi Displinary Quarterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal

Super Prakashan Present's Vol. 8, Issue 35

April-June, 2023

An International Refreed/Peer Reviewed Research Journal of
Humanities, Arts, Social Studies, Commerce and Science

Chief Editor :
Prof. Bindu Singh

Editor :
Dr. Seema Mishra

दि गुंजन

वर्ष 8, अंक 35

(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

वर्ष-8, अंक-35 अप्रैल-जून, 2023

Index

- Prof. (Dr.) Bindu Singh : Chief Editor, `The Gunjan' (Multi Disciplinary Quarterly International Refreed / Peer Reviewed Research Journal) & (Prof. & Head, Deptt. of Sanskrit) K. K. (P. G.) College, Etawah - 206001 (U.P.)

&

- Dr. Seema Mishra : Editor - : `The Gunjan' (Multi Disciplinary Quarterly International Refreed / Peer Reviewed Research Journal) & Assistant Professor, Dept. of B. Ed., Dr. Virendra Swaroop Institute of Professional Studies, Kidwai Nagar, Kanpur-208001 (U.P.)

1-	A Study of Factor Affecting Investment Decisions of Educated Women in Basti District	- Deepika Seth - Dr. Akhilesh Kumar Dixit	7
2-	A Study of Drugs and Substance Abuse among Adolescents	- Dr. Preeti Yadav	16
3-	Skills and Qualities of Teacher in Present Context : A Review	- Dr. Sabiha Anjum	20
4-	Corporate Social Responsibility and Sustanability : The New Bottom Line	- Dr. Seema Mishra	25
5-	Sannyasa in the Bhagavadgita and its Contemporary Relevance	- Udhav Sureka	31
6-	Cross Border Terrorism and Position of India	- Mrs. Nidhi Sharma	36
7-	झारखण्ड में आदिवासी महिलाओं की राजनीतिक स्थिति	– डॉ. आलोक आनन्द	45
8-	वर्तमान में मानव के जीवन में संगीत की उपादेयता : एक अध्ययन	– डॉ. मोहिनी शुक्ला	48
9-	हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श	– डॉ. महादेव चिन्तामणी खोत	56
10-	उत्तर प्रदेश ग्राम पंचायतों के विकास की स्थिति	– राम करन	60
11-	उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में सामाजिक जीवन मूल्य	– डॉ. प्रियंका कुमारी – डॉ. त्रिविक्रम नारायण सिंह	67
12-	उत्तर प्रदेश में लघु औद्योगिक इकाइयों के संदर्भ में विभिन्न योजनाओं में सार्वजनिक क्षेत्र पर व्यय (कानपुर जनपद के विशेष संदर्भ में)	– राजन लाल, – मेनका सिंह – राकेश कुमार कुशवाहा	72
13-	ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के काव्य में समाज दर्शन	– ज्योति कुमारी – डॉ. शमा खान	77
14-	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आंचलिकता	– डॉ. ममता शर्मा	81
15-	भारत में बेरोजगारी की समस्या	– डॉ. ज्योतिकाबेन बी. पटेल	84
16-	स्वतन्त्रता आन्दोलन में सुभद्रा कुमारी चौहान की भूमिका	– डॉ. सुमन सिंह	89
17-	प्रेमचन्द और रेणु के प्रतिनिधि उपन्यासों के संवेदनशील कथ्य का पर्यवेक्षण	– प्रो. नीलम बाजपेई	93

18-	सामाजिक विसगंतियो के परिप्रेक्ष्य में रामराज्य की प्रासंगिकता	– शोभा मिश्रा	97
19-	प्रभा खेतान एवं नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व का अध्ययन	– ममता कुमारी	101
20-	मध्यकालीन हिन्दी भाषा के विविध रूप	– रूबी मौर्या	105
21-	राही मासूम रज़ा और उनका साहित्यिक योगदान	– रवीन्द्र कुमार मौर्य	109
22-	मनोविकारो में सहायक संगीत	– डॉ. काजल शर्मा	114
23-	मीरा के गिरधर नागर : अध्यात्मिक जीवन और सघर्ष	– डॉ. गीता दुबे	117
24-	भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें	– डॉ. उषा शुक्ला	122
25-	मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में स्त्री जीवन के विविध आयाम	– अर्चना चौरसिया	127
26-	महिलाओं की राजनीति में सहभागिता	– डॉ. शीबा खातून	131
27-	बालक के विकास (शारीरिक, गत्यात्मक एवं बौद्धिक क्षेत्रों) फ्लोराइड (फ़्लोरिन) के प्रभाव का अध्ययन	– डॉ. विनीता श्रीवास्तव	135
28-	समायोजन का मानव जीवन पर प्रभाव	– डॉ. सुनीता भदौरिया – पूनम शुक्ला	140
29-	राष्ट्रकवि मैथिलीरण गुप्त की राष्ट्रवादी चेतना	– डॉ. आशुतोष त्रिपाठी	146
30-	वामन पुराण के रचयिता का स्थिति काल एवं परिचय	– प्रो. बिन्दू सिंह	148
31-	**Action Research in Teaching and Learning Strategies on English in India**	- Dr. Jitendra Singh	151
32-	**Foreign Direct Investment in India's Retail Trade, Some what it is Bane but Enormously Boon**	- Alay Anand	156
33-	महात्मा गाँधी जी के धर्म सम्बन्धी विचार	– डॉ. प्रीती सिंह	159
34-	किशनगढ़ की चित्रकला : राजस्थानी संस्कृति की एक अनमोल धरोहर	– डॉ. कल्पना गौड़	162

ISSN : 2349-9273

Received: 22 February, 2023; **Accepted:** 28 March-2023, **Published:** April-June, 2023, Issue

महात्मा गाँधी जी के धर्म सम्बन्धी विचार

– डॉ. प्रीती सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर –
राजनीति विज्ञान विभाग,
डी. बी. एस. (पी.जी.) कालेज,
कानपुर – 208006 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
singhpriti7284@gmail.com

सारांश

सत्य के प्रयोग से, अहिंसा के मंत्र से, मौन की साधना से, त्याग के शस्त्र से, कर्तव्य के निर्वाह से, प्रेम एवं सर्वस्य अर्पण की वन्दना से भारत देश और उनके निवासियों के हृदय सम्राट, साबरमती संत, राष्ट्रपिता 'महात्मा गाँधी' हम सभी के लिए अभिनन्दनीय एवं वन्दनीय है। अभिनन्दन और वन्दन उसी का होता है, जिसने अपने कर्मों से महत आकाश की ऊँचाई में लंघन करके उसका आरोहण किया हो। इसका जीवन्त प्रमाण महात्मा गाँधी हैं, जो भारतीयों की आकांक्षाओं का पर्याय थे और आज भी भारतीयों का दर्शन हैं। उनके कर्म सिद्धान्त ही स्वयं उनका दर्शन है, जिसमें सत्य के प्रयोगों की प्रयोगशाला में अहिंसा, प्रेम शांति के रसायन से स्वतंत्रता की औषधि प्राप्ति हुई थी। इसकी प्राप्ति में बलिदान, समर्पण, उत्कृष्ट अभिलाषा, उत्साह, धैर्य का मणिकान्चन समिश्रण था। समष्टि चेतना से युक्त मानवों ने अपने सुख और स्वार्थ को छोड़कर मानवी सभ्यता और संस्कृति को समृद्धि किया है। ऐसे त्यागी और तपस्वी मानवों को जो अपने कर्म की महानता का और आचरण की सभ्यता का उत्कृष्ट परिचय देते हुए मानव मूल्यों की स्थापना की है उसे ही हम महात्मा कहते हैं।

भारत की धरा में ऐसे कई सपूतों ने जन्म लिया है उन्हीं में एक है महात्मा गाँधी जो अपने हिय की विशालता तथा कर्म की शुद्धता का परिचय देते हुए धर्म की नई दिशा एवं राह दिखाई है। भारतभूमि की पहचान ही धर्मभूमि के रूप में होती रही है। विश्व के लगभग सभी धर्मों की स्थापना भी भारतभूमि पर हुई है चाहे वह हिन्दू धर्म हो या बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म सभी के जन्मदाता या संस्थापक भारत के ही सुपुत्र थे जिस देश में भगवान भी अपना भगवत्य त्यागकर मानव रूप में आए हो वहाँ के धार्मिक आदर्श भी अत्यन्त उच्च कोटि के है। कंदराओं मे बैठकर तप करके ईश आराधन करना ही जहाँ धर्म नहीं वरन् सबको समान दृष्टि से देखकर सबके सुख–दुख, हित साधना 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' वसुधैव कुटुम्बकम् में ही अपने धर्म का मूल तत्व खोजना ही धर्म का चरम आदर्श है। भारतीय संस्कृति अपने उत्कृष्ट गुण धर्म के कारण ही अतुलनीय है। इस देश मे धर्म का अर्थ ईश प्राप्ति जैसा संकुचित बोध ज्ञान नहीं हो सकता बल्कि मानवता के मूल उत्स की प्राप्ति करना ही धर्म है, जिसमें आत्मा से होते हुए परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है।

गाँधी जी का जन्म मूलतः वैष्णव सम्प्रदाय में हुआ था अतः हवेली (वैष्णव मंदिर) जाने का मौका उन्हें मिलता था। हवेली जाकर भी उन्हें उतनी श्रद्धा नहीं हुई जितनी पुरानी नौकरानी धाय रम्भा से मिली थी। रामरक्षा का पाठ करना, रामायण के प्रति अगाध प्रेम और रामायण को ही भक्ति मार्ग का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ मानते थे। किन्तु राजकोट में उन्हें सभी सम्प्रदायों के प्रति

समभाव की शिक्षा मिली। वे कहते है– "मैंने हिन्दू धर्म के हर सम्प्रदाय का सम्मान करना सीखा क्योंकि माता–पिता वैष्णव मंदिर में, शिवालय में एवं राम मन्दिर में भी जाते एवं भाईयों को ही साथ ले जाते या भेजते थे। मुझे पारिवारिक परिवेश ही ऐसा मिला कि सभी धर्मों के प्रति समान श्रद्धा का भाव जाग्रत हो गया किन्तु मुझे ईसाई धर्म अपवाद स्वरूप लगा क्योंकि "जिस धर्म की वजह से गोमांस खाना पड़े, शराब पीनी पड़े एवं अपनी वेशभूषा बदलनी पड़े उसे धर्म कैसे कहा जाय? मेरे मन ने यह दलील दी फिर भी यह सुनने में आया कि जो ईसाई बने थे उन्होंने अपने पूर्वजों के धर्म की, ढंग–रिवाजों की एवं स्वदेश की बुराई करना भी शुरू कर दिया था इन सभी बातों से मेरे हृदय में ईसाई धर्म के प्रति खिन्नता पैदा हो गई।"

गाँधी जी विचारों से भारतीय संस्कृति पर पूर्णरूपेण आसक्त थे और निर्गुण ब्रह्म के उपासक भी। उनके ब्रह्म अनन्त, अनादि थे परन्तु सर्वशक्तिमान जिससे की गई प्रार्थना उन्हें बल प्रदान करती थी। इसलिए प्रार्थना की शक्ति पर विश्वास और उसका गुणगान उनका नित्यकर्म था। बेहतर जीवन प्राप्त करने में कर्म और ज्ञान ये दोनों ही अपनी भूमिका के पूर्णकालिक सिपाही हैं जिसमें किसी को भी एक क्षण का विश्राम करने की छूट वह नहीं देते थे। ज्ञान किसी से भी प्राप्त किया जाय अध्ययन, श्रवण, वार्ता किसी भी अंग से परन्तु सार्थक ज्ञान हो तो जीवन की धारा को अवश्य प्रभावित करता है। इसलिए धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के भी वह पिपासु थे और अपनी प्रार्थना सभा में गीता, कुरान बाइबिल सभी का ज्ञान सुनते और सुनाते थे और हमेशा गुनगुनाते थे –

"रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम।"
"ईश्वर अल्लाह तेरो नाम सबको सम्मति दे भगवान।"

श्रीमद्भागवत गीता के प्रति उनकी निष्ठा अपनी माँ के प्रति निष्ठा के समान थी वह कहते थे जब हमें किसी भी समस्या का समाधान नहीं मिलता था तो मैं गीता माता की शरण में जाता हूँ और समस्या मुक्त हो जाता हूँ। गांधी जी धर्म का एक अंग नैतिक आचरण और संयमशील जीवन को भी मानते थे। "सत्य हरिश्चन्द्र" नाटक देखने के बाद से सदा 'सत्य' की विजय होती है मन में बांधी यह गाँठ उनके सम्पूर्ण जीवन का प्रतीक बन गई और सत्यता का पाठ आजीवन पढ़ाती रही। उन्हें लगता था कि संसार नीति पर टिका है और नीति मात्र का सार सत्य में है।" अतः सत्य को जानने की इच्छा मेरे मन में प्रबल हो गई। नीति का यह छप्पय उनके दिल के बहुत करीब था –

"पाणी आपने निकट, भलुं भोजन तो दीजे।
आवी नमावे शीश, दण्डवत कोड़े कीजे।
आपण घासे दाम, कार्य महोरोनुं करीए।
आप उगारे प्राण, ते ताण दुःखमां मरीए।
गुण केडे तो गुण दश गणो, मन वाचा, कर्मे करी।
अवगुण केडे जो गुण करे, ते जगमां जीत्यो सही।"

गाँधी जी धर्म को मानव संवेदना से भी जोड़ते थे उनका मानना था कि अगर कोई व्यक्ति संकट में है और हम उसकी मदद नहीं कर सकते तो उसके लिए प्रार्थना तो कर ही सकते हैं। वह मानते थे कि सभी धर्मों का सार एक ही है, बस उसकी पद्धतियाँ अलग–अलग हैं। वह दुनिया के महान धर्मों में निहित मौलिक सत्य में ही विश्वास करते थे। उनका प्रिय भजन था – **"वैष्णव जन तेणे कहिए जे पीर पराई जाणे रे"** गाँधी जी रूढ़ि ओर अंधविश्वास के विरोधी थे और कहते थे– **"मैं किसी ऐसे धार्मिक सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करता जो बुद्धि को न जँचे और नैतिकता के विरुद्ध हो मैं किसी ऐसे धर्म ग्रन्थ के वचनों को अपनी बुद्धि पर हावी नहीं होने देता।"**

गाँधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे वे अहिंसा की दृष्टि से बंदूकधारी और उसके साथ देने वाले में कोई अंतर नहीं मानते थे। अपनी बीमारी के समय भी वह अपने अहिंसावादी विचारधारा पर टिके रहे और कहा "मैं सब कुछ करूंगा, लेकिन आप एक चीज का आग्रह न करें। मैं दूध और दूध के पदार्थ अथवा मांसाहार नहीं लूँगा। उन्हें न लेने से देहक्षय होता हो, तो वैसा होने देने में मुझे धर्म प्रतीत होता है।"

कला, धर्म, अर्थशास्त्र पुरुषों और महिलाओं के आपसी सम्बन्ध तथा राजनीति के बारे में गाँधी जी के समूचे दृष्टिकोण एवं विचारों पर टालस्टाय की गहरी छाप थी। भगवद्गीता, उपनिषद् और ईसामसीह के जीवन और शिक्षाओं ने इन्हें काफी प्रभावित किया है। गाँधी जी के अनुसार– "धर्म सिर्फ व्यक्तिगत शुद्धीकरण का माध्यम नहीं है, लेकिन वह एक व्यापक शक्तिशाली सामाजिक बंधन है। इस रूप में भविष्य का अहिंसक समाज, जो लगभग पंचायतीराज या रामराज की तरह था, को धर्म पर आधारित होना चाहिए था। इसका अर्थ यह है कि वह सिर्फ धर्म–निरपेक्षता पर आधारित नहीं होगा बल्कि उसका आधार आध्यात्मिक आम सहमति होगा।" गाँधी जी एक धार्मिक व्यक्ति थे और जीवन को पूर्णरूप में देखते थे। उन्होंने अपने माता–पिता एवं साथियों से बहुत कुछ सीखा।

उनके ऊपर अपने धार्मिक गुरु रायचन्द्र भाई का बहुत प्रभाव पड़ा था।[1] इन्होंने विभिन्न धर्मों के बारे में गहन अध्ययन किया चाहे वह नर्मदाशंकर की 'धर्म विचार' हो या मैक्समूलर की 'हिन्दुस्तान क्या सिखाता है' हो अथवा थियोसाफिकल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित उपनिषद् हो। भगवद्गीता और टालस्टाय की 'किंगडम आफ गॉड इज विदिन यू' ने तो इनकी सोच को ही स्थायी बना दिया।

महात्मा गाँधी न तो मूलतः राजनीतिक विचारक थे और न ही राजनीतिज्ञ आन्दोलनकारी। बल्कि वे मूलतः धार्मिक, मानवतावादी, कर्मयोगी और अंतःप्रेरणा के पुरुष थे। हमारे लिए गांधी जी के अनुसार– "धर्म कोई अनजान चीज नही है, वह हमेशा से हमारे अन्दर रहा है। कुछ में जानबूझकर, कुछ में अनजाने में।"[2] एस. राधाकृष्ण के अनुसार– "गाँधी जी धर्म के जोरदार समर्थक थे, उनके लिए धर्म सिर्फ आस्था का विषय नहीं बल्कि इनके जीवन के सभी कार्यकलापों की आधारशिला थी। कोई भी ऐसा चीज उन्हें प्रभावित नहीं कर सकती थी जो अधार्मिक और अनैतिक हो तदनुसार धर्म की गाँधीवादी अवधारणा का वास्तविक आध्यात्मिक आधार है।"[3]

जिस समय देश अंग्रेजों की दासता से त्राहिमान कर रहा हो उस समय धर्म ही देशवासियों को एक सूत्र में बांधे था। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई यह कोई धर्म नही बल्कि पंथ है जो सभी को भिन्न–भिन्न मार्गों से आने पर भी एक ही ईश्वर के बिन्दु पर मिलते है। उस समय सभी मतावलम्बी बस एक धर्म 'देश धर्म' एक ही ईश्वर भारतमाता की शरण में थे और उनकी स्वतंत्रता, स्वाधीनता हेतु प्रयास करना ही एकमात्र पूजा अर्चना थी। गाँधी जी ने भी इसीलिए धर्म का अर्थ सेवा को स्वीकार किया था। गरीब वंचित, रोगियों की उन्होंने स्वयं सेवा–सुश्रुषा की। और देश में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का मैला ढोये जैसी दुर्निवार समस्या को अपने सेवाधर्म से समाप्त किया।

गाँधी जी एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे जो पूरे विश्व के सहिष्णुता एवं विनम्रता का पाठ पढ़ा सके। इनके अनुसार भारत में धर्म मूलभूत शक्ति थी, मैं धर्म को सत्य से जोड़ता हूँ और धर्म की व्याख्या सत्य के धर्म के रूप में ही करता हूँ। पिछले कुछ समय से यह कहने के बजाय कि ईश्वर सत्य है, मै यह कहने लगा हूँ कि सत्य ही ईश्वर है, क्योंकि गाँधी जी को भारतीय संस्कृति की आत्मिक शक्ति पर अटूट विश्वास है। भारत नैतिकता मातृत्व सहअस्तित्व और प्रमुख धर्मों का केन्द्र रहा है। इन्होंने ईश्वर को सत्य के रूप में परिभाषित किया, ईश्वर को आंतरिक शुद्धीकरण और प्रेम में पाया जा सकता है। "ईश्वर को मंदिरों या मूर्तियों या मनुष्य द्वारा निर्मित पूजा स्थलों में नहीं पाया जा सकता, न ही उसे परिवर्जन द्वारा पाया जा सकता है। ईश्वर को सिर्फ प्रेम के द्वारा पाया जा सकता है जो सांसारिक नहीं बल्कि दिव्य हो।"

गाँधी जी मानते थे कि एक धर्म ही ऐसा सिद्धान्त है, जो लोगों को एक सूत्र में बांधकर रख सकता है जो व्यक्ति अपने धर्म का पालन करता है वह दूसरे धर्म का सम्मान भी करता है। बुद्ध और महावीर की नीतियाँ मुहम्मद साहब की शिक्षा ईसामसीह का उपदेश सभी का उद्देश्य एक ही था मानवता और मानव जाति की सेवा। इस प्रकार सभी धर्मों का लक्ष्य मानवता की शुद्धीकरण एवं मानवता की सेवा है। गाधी जी ने धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन कर यह पाया कि सम्पूर्ण रूप से धर्म पूरी दुनिया को प्रेम सत्य और सार्वभौमिक भाईचारे के बारे में सिखाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा चेतन प्रकाश, सत्य के प्रयोग, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 41।
2. शर्मा चेतन प्रकाश, सत्य के प्रयोग, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 41।
3. शर्मा चेतन प्रकाश, सत्य के प्रयोग, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 42।
4. चतुर्वेदी गांधी महेन्द्र, नेहरू टैगोर और अम्बेडकर, वोहरा पब्लिकेशन, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या – 29।
5. शर्मा चेतन प्रकाश, सत्य के प्रयोग, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, सत्य के प्रयोग, पृष्ठ संख्या – 313।
6. कुशवाहा रेणु कुमारी गांधी दर्शन के 5 सूत्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 48।
7. कुशवाहा रेणु कुमारी गांधी दर्शन के 5 सूत्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 48।
8. कुशवाहा रेणु कुमारी गांधी दर्शन के 5 सूत्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 52।
9. कुशवाहा रेणु कुमारी गांधी दर्शन के 5 सूत्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 69।
10. शर्मा चेतन प्रकाश, सत्य के प्रयोग, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 78।